Shakti's Classes for Ayurveda
Chiseling the Brilliants

SINCE 2011 IN VARANASI

SHAKTI'S CLASSES for AYURVEDA

A Complete Centre for MD/MS(AIAPGET.), MO (UPSC & PSC), Other Ayurvedic Entrance Examination and Foundation Courses for Proff. I, II & III

History of Ayurveda & Padarth Vigyan

By
Dr. Shakti Raj Rai
9452376134

History of Ayurveda

Dr. Shakti Raj Rai

Some Important Books and their Authors-

Controversial drugs in Indian Medicine	Bapalal Vaidya
History of Aryan Medical Science	Bhagvat Singh Ji
History of Indian Medicine	Girendra Nath Mukhopadhya
Classical Doctrine of Indian Medicine	Philioja
History of Ayurveda in South India	Dr. Gopalacharlu
Studies in the Medicine of Ancient India	Dr. Hornley
Fundamental of Ayurvedic Medicine	Bhagawan Das
Science and Art of Indian Medicine	Shri Niwas Murthi
History of Hindu Chemistry	P.C. Roy
Indian Medicine in Classical Age	P.V. Sharma
Classical Uses of Medicinal Plants	P.V. Sharma
Indian Medicinal Plant	Shri Kirtikar Ji
System of Ayurveda	Shiv Sharma
Ayurvedic Medicine- Past and Present	Shiv Sharma
Glossary of Vegetable Drugs in Brihadatrayi	Thakur Balwant Singh

वैदिक वाङ्मय चार खण्डों में विभक्त है - संहिता, ब्राह्मण, उपनिषद व वेदांग

वेदांग - 6 शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छंद तथा ज्योतिष

वेदों के उपवेद, ब्राह्मणग्रंथ तथा ऋषियों के नाम निम्न हैं -

वेद	**उपवेद**	**ब्राह्मण ग्रंथ**	**ऋषि**
ऋग्वेद	धनुर्वेद	एतेरेय	पैल
यजुर्वेद	स्थापत्यवेद	शतपत	वात्स्यायन
सामवेद	गान्धर्ववेद	ताण्ड्य	जैमिनी
अथर्ववेद	आयुर्वेद	गोपथ	सुमन्त

आयुर्वेद को - चरणव्यूह तथा प्रस्थानभेद - ऋग्वेद का उपवेद

चरक, सुश्रुत तथा काश्यप - अथर्ववेद का उपवेद

ऋग्वेद (काल 4000-6000 ई0पू0)

- ऋग्वेद में मण्डल की संख्या - 10
- अश्विनी कुमारों को ''देवानांभिषजौ'' कहा गया।
- अश्विनी कुमारों ने दधिची से ''मधुविद्या'' तथा ''प्रवर्ग्य विद्या'' सीखा।
- अंगप्रत्यारोपण तथा संजीवनी विद्या में कुशल थे।
- वानस्पत्य के स्थान पर ''वनिन्'' शब्द मिलता है।
- सप्तधातुओं के लिए ''सप्तसिन्धु'' शब्द का प्रयोग।

अथर्ववेद (काल 1500 ई0पू0)

- अथर्ववेद में काण्ड की संख्या - 20 (3 भाग – प्रपाठक, अनुवाद एवं युक्त)।
- आयुर्वेद का अधिकांश वर्णन द्वितीय काण्ड में है।
- आंगिरस, ब्रह्मवेद, छन्दोवेद, महीवेद, भैषज्यवेद, अथर्वांगि व रसवेद इसका पर्याय है।
- शाखा-9 जलद, पैप्पलाद, तोद, मोद, शौनक, जाजल, ब्रह्मावद, देवदर्श व चारणवैद्य।
- कल्पसूत्र-5 कौशिक, वैतान, नक्षत्र, आंगिरस व शान्तिकल्प।
- अथर्ववेद का उपनिषद् - प्रश्न, मण्डूक व माण्डूक्य है।

Ayurveda of Vedic Era

भास्कर सम्प्रदाय के आचार्य तथा रचनाएँ - ब्रह्मवैबर्तपुराण के अनुसार

धन्वन्तरी	चिकित्सा तत्व विज्ञान	जाबाल	तन्त्रसार
अश्विनी कुमार	चिकित्सा सार तन्त्र	यम	ज्ञानार्णव
दिवोदास	चिकित्सा दर्पण	बुध	सर्वसार
काशीराज	चिकित्सा कौमुदी	पैल	निदान
नकुल	वैद्यक सर्वस्व	च्यवन	जीवादान
जनक	वैद्य संदेह भंजन	अगस्त्य	द्वैध निर्णय
सहदेव	व्याधि सिंधु विमर्दन	कवथ	सर्वधर
जाजलि	वेदांग सार		

Shakti's Classes for Ayurveda

त्रिदोष सिद्धांत स्पष्ट रूप से है

वात	-	वात
पित्त	-	शुष्म व मायु
कफ	-	अभ्र व बलास

रोगों के भेद है - शपथ्य - आहारनिमित्तज - युक्ति व्यपाश्रय चिकित्सा
वरूण्य - शापादि निमित्तज - दैव व्यपाश्रय चिकित्सा

- निज के लिए रोग तथा आगन्तुज के लिए ''आस्राव'' शब्द का प्रयोग किया।
- शरीरस्थ अग्नि के लिए ''वैश्वानर'' तथा विषम ज्वर के लिए ''तक्मा'' शब्द का प्रयोग।
- औषध तथा वनस्पति शब्द का प्रयोग तो है लेकिन वानस्पत्य तथा वीरूध का नहीं।
- वनस्पतियों का पिता-अन्तरिक्ष, माता - पृथ्वी, मूल - समुद्र
- जिस प्रकार पुष्पों का सार मधु उसी प्रकार धातुओं का ओज है।

प्रयोग भेद से औषधियों के 4 प्रकार है -

1. आथर्वणी - शान्ति-पौष्टिक कर्म
2. आंगिरसी - उच्चाटन-मारणदि घोर कर्म
3. देवी - रसायनार्थ
4. मनुष्यजा - सामान्य रोग निवारणार्थ

वेदोक्त औषधियाँ - ऋग्वेद-67, यजुर्वेद-81, अथर्ववेद-289, ब्राह्मणग्रंथ-129, उपनिषद्-31

आयुर्वेद का अवतरण -

- ब्रह्मा-दक्षप्रजापति-अश्विनीकुमार-इन्द्र-भरद्वाज-आत्रेय-छः शिष्य - चरक संहिता व अष्टांग हृदय
- ब्रह्मा-दक्षप्रजापति-अश्विनीकुमार-इन्द्र-धन्वन्तरि-सुश्रुत - सुश्रुत संहिता
- ब्रह्मा-दक्षप्रजापति-अश्विनीकुमार-इन्द्र-आत्रेय-अग्निवेश - भाव प्रकाश
- ब्रह्मा-दक्षप्रजापति-अश्विनीकुमार-इन्द्र-वशिष्ट, काश्यप, अत्रि व भृग - काश्यप संहिता

ब्रह्मा से इन्द्र काल	वैदिक काल
उसके उपरान्त	संहिता काल
आयुर्वेद के आद्य उपदेष्टा	ब्रह्मा

Ayurveda in Samhita Era

वृहद्त्रयी - चरक संहिता
सुश्रुत संहिता
अष्टांग हृदय

लघुत्रयी - माधव निदान (7th Cent. AD)
शार्ङ्गधर संहिता (13th Cent. AD)
भाव प्रकाश (16th Cent. AD)

Shakti's Classes for Ayurveda

चरक संहिता

मूल उपदेष्टा	Expounder	आत्रेय पुनर्वसु
तंत्रकर्ता	Author	अग्निवेश (1000 BC)
भाष्यकारध्प्रतिसंस्कर्ता	Reductor	चरक (2-3 BC)
पूरक (द्वितीय प्रतिसंस्कर्ता)	Completer	दृढ़बल (4th Cent. AD)

आयुर्वेदावतरण - च0सू0 1 - चरक द्वारा प्रतिसंस्कृत

च0चि0 1/4 - अग्निवेश कृत

भाव प्रकाश के पूर्वखण्ड में चरक को ‘‘शेषावतार’’ या ‘‘अनन्तावतार’’ कहा गया है -

चरक संहिता पर संस्कृत टीकाएँ निम्न है - (43)

टीकाग्रंथ	लेखक	काल
चरक न्यास	भट्टार हरिश्चन्द्र	6th Cent.
चरक पंजिका	स्वामि कुमार	7th Cent.
निरंतर पदव्याख्या	जेज्जट	9th Cent.
परिहार वार्तिक	आषाढ़ वर्मा	9th Cent.
वृहद् तन्त्र प्रदीप	नरदत्त	10th Cent.
चरक चन्द्रिका	गयदास	10th Cent.
आयुर्वेद दीपिका	चक्रपाणि	11th Cent.
चरकवृत्ति	गुणाकर	13th Cent.
चरक तत्व प्रदीपिका	शिवदास सेन	15th Cent.
जल्पकल्पतरू	गंगाधर राय	19th Cent.
चरकोपस्कार	योगेन्द्र नाथ सेन	20th Cent.
चरक प्रदीपिका	ज्योतिष चन्द्र सरस्वती	20th Cent.

चरक संहिता की हिन्दी टीकाएँ निम्न आचार्य ने लिखा है -

1. श्री कृष्ण लाल
2. राम प्रसाद शर्मा
3. जयदेव विद्यालंकार
4. अत्रिदेव विद्यालंकार
5. वैद्यमनोरमा - विद्याधर शुक्ल
6. चरक चन्द्रिका - ब्रह्मानन्द त्रिपाठी
7. विद्योतिनी - काशीनाथ शास्त्री तथा गोरखनाथ चतुर्वेदी

Shakti Ayurveda

अतिरिक्त संस्कृत टीकाएँ -

अमित प्रभ	न्यास	11 th Cent.
श्री कृष्ण वैद्य	चरक भाष्य	11 th Cent.
क्षीर स्वामिदत्त	चरक वार्तिक	19 th Cent

- गयदास को ''चन्द्रिकाकार'' तथा क्षीरस्वामिदत्त को ''वार्तिककार'' कहते है।
- चरक संहिता के अंग्रेजी अनुवादक - अविनाश चन्द्र 1891-99 (Kolkata)
- अंग्रेजी संस्करण जामनगर से 1949 में प्रकाशित हुआ।
- चरक संहिता तथा चक्रपाणि टीका के अंग्रेजी अनुवादक - रामकरण शर्मा एवं भगवान दास
- चरक संहिता का अरवी अनुवाद - "Sharak Indianas"
- चरक क्लब की स्थापना प्रोफेसर ऑसलर- न्युयार्क (1898)
- चरक संहिता का उल्लेख अलवरूनी (11th Cent.) भारत यात्रा के दौरान किया।

चरक संहिता में वर्णित परिषद् तथा विषय –

प्रथम	च0सू0 1	हिमवत् पार्श्व में - आयुर्वेदावतरण
द्वितीय	च0सू0 12	वात का गुणदोष
तृतीय	च0सू0 25	काशी में - पुरूष तथा विकारों की उत्पत्ति
चतुर्थ	च0सू0 26	रसों की संख्या निर्धारण
पंचम्	च0शा0 3	गर्भ की उत्पत्ति
षष्टम्	च0शा0 6	गर्भ में प्रथम अंग की उत्पत्ति
सप्तम्	च0सि0 11	वस्ति के लिए उपयुक्त संशोधन फलों में श्रेष्ठता

सुश्रुत संहिता

मूल उपदेष्टा	भगवान धन्वन्तरी 1000-1500 ई0पू0 (2350 Cent. BC)
तंत्रकर्ता	वृद्ध सुश्रुत 1000-1500 ई0पू0 (सौश्रुत तंत्र की रचना)
प्रतिसस्कर्ता	सुश्रुत द्वितीय – (3rd Cent. AD) (सप्तवाहन काल)
प्रतिसंस्कर्ता	नागार्जुन (उत्तर तंत्र को जोड़ा) – (5th Cent. AD)
पाठशुद्धिकर्ता	चन्द्रट (जेज्जट की टीका के आधार पर) – (10th Cent. AD)

- सुश्रुत विश्वामित्र के पुत्र थे।
- इन्द्र की आज्ञा से दिवोदास ने काशी नगर की स्थापना की।

Shakti's Classes for Ayurveda

पदार्थ विज्ञान

Dr. Shakti Raj Rai

भारतीय दर्शन

निरुक्ति व परिभाषा

दृश धातु + ल्युट् प्रत्यय

- **दृश्यते अनेन इति दर्शनम् -** जिससे सत्य तत्व का दर्शन होता है।
- दार्शनिक धाराओं का मूल स्थान ऋग्वेद है अर्थात वैदिक काल से ही दर्शनों का विकास हुआ। वेद के अंतिम भाग उपनिषदों के तत्व ज्ञान के समालोचनार्थ षड्दर्शन का विकास हुआ।

दर्शन की संख्या

भारतीय दर्शन	2 दर्शन	आस्तिक दर्शन व नास्तिक दर्शन
याज्ञवल्क्य स्मृति	2 दर्शन	न्याय व मीमांसा
सर्वसिद्धांत प्रवेशक	7 दर्शन	
अग्निपुराण	11 दर्शन	

- रेखागवय न्याय में तर्कों के विभिन्न मतों की संख्या - 363
- **"यतो अभ्युदयो निः श्रेय सिद्धिस धर्मः।" - वैशेषिक दर्शन**

  जिससे अभ्युदय व निःश्रेय की सिद्धि होती है उसे धर्म कहते है।
- **"कणादं पाणिनीयं च सर्वशास्त्रोपकारकम्"।**

  वैशेषिक दर्शन व पाणिनीय व्याकरण को सभी शास्त्रों का उपकारक कहते है।

दर्शन पर प्रमुख ग्रंथ

ग्रन्थ	लेखक	ग्रन्थ	लेखक
कारिकावली	विश्वनाथ पञ्चानन	सांख्यकारिका	श्री ईश्वर कृष्ण
न्यायमञ्जरी	जयन्तभट्ट	सर्वदर्शन कौमुदी	श्री माधव सरस्वती

Shakti's Class for Ayurveda

षड्दर्शन समुच्चय	हरिभद्र सूरी	पञ्चरात्राशय	कवि राजशेखर
सर्वदर्शन संग्रह	माधवाचार्य		

A. आस्तिक दर्शन - वेद, ईश्वर व परलोक/पुनर्जन्म में आस्था रखता हो। इनकी संख्या 6 है।

न्याय दर्शन	सांख्य दर्शन	मीमांसा दर्शन
वैशेषिक दर्शन	योग दर्शन	वेदान्त दर्शन

1. न्याय दर्शन

- **पर्याय** - आन्वीक्षिकी, तर्कविद्या, वादविद्या
- **प्रणेता** - गौतम (अक्षपाद)
- 'प्रमाणैरर्थपरीक्षणं न्याय' - प्रमाणों द्वारा तत्व की परीक्षा करना इनका प्रमुख उद्देश्य है।
- न्याय सूत्र में अध्यायों की संख्या - 5
- न्याय सूत्र के भाष्यकार कात्यायन है। इन्होंने न्याय सूत्रकर्ता अक्षपाद को कहा है।

न्याय दर्शन में 16 तत्वों का वर्णन है –

प्रमाण-4	प्रमेय-12	संशय	प्रयोजन	द्रष्टा	सिद्धांत-4	अवयव-5	तर्क-11
निर्णय	वाद	जल्प	वितण्डा	हेत्वाभास-5	छल-3	जाति-24	निग्रहस्थान-22

न्याय के अनुसार ने गुण-24	**वैशेषिक**-5 **आध्यात्म**-6 **परादि**-8 (अभ्यास व युक्ति नहीं माना) **गुर्वादि**-3+2

- सृष्टि की उत्पत्ति में परमाणु को समवायि कारण तथा ईश्वर को निमित्त कारण माना है।

नव्य न्याय ने पदार्थ	7	द्रव्य	गुण	कर्म	सामान्य	विशेष	समवाय	अभाव
छल की संख्या	3	अभिदान	उपचार	तात्पर्य				
सिद्धांत	4	सर्वतंत्र	प्रतितंत्र	अधिकरण	अभ्युपगम			

2. वैशेषिक दर्शन

पर्याय	औलुक्य दर्शन, काश्यप दर्शन, समान तत्व, समान न्याय, कल्प न्याय
प्रणेता	कणाद या औलुक्य

इनके सूत्रों का आरम्भ "अथातो धर्म जिज्ञासा" से होता है।

- 10 खण्डों में विभक्त है।
- भाषा परिच्छेद, तर्क संग्रह व मुक्तावली आदि प्रतिपादक ग्रंथ हैं।

वैशेषिक दर्शन पर निम्न टीकाएँ है -

1. व्योमवती
2. न्यायकन्दली
3. सेतु
4. प्रशस्तपादभाष्य
5. किरणावली
6. दशपदार्थ

- **पदार्थ**-6 द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष व समवाय
- **द्रव्य**- 9 पञ्चमहाभूत, आत्मा, मन, काल व दिशा
- **गुण**-17 वैशेषिक-4 रूप, रस, गंध व स्पर्श (शब्द नहीं माना)
  आध्यात्म-6
  परादि-7 (युक्ति संस्कार व अभ्यास नहीं माना)

- वैशेषिक दर्शन का पीलूपाक, परमाणुपाक व षड्पदार्थ आयुर्वेद भी मानता है।
- अरस्तु के सिद्धांतों पर भी इस दर्शन का प्रभाव पड़ा।
- अंग्रेजी व चीनी भाषा में भी अनुवाद हुआ।

3. सांख्य दर्शन

- **प्रणेता** - कपिल मुनि
  - मत्स्यपुराण के अनुसार कपिल दर्शन ने तत्व गणना की।
- **षष्टी तंत्र के रचयिता** - महर्षि कपिल
  - श्री मद्भागवत में 'कपिल' को विष्णु का पञ्चम् अवतार कहा है।
- **तत्व या पदार्थ** – 25

Shakti's Classes for Ayurveda

- सत्कार्यवाद के समर्थक व इन्द्रियों को अहंकारिक माना।
- 'पंग्वंध न्याय' के प्रतिपादक है।
- पतंजलि ने तत्व ज्ञान के लिये 'प्रसंख्यान' शब्द का प्रयोग किया।
- सांख्य अतिशय प्राचीन दर्शन है।
- **प्रमाण**- 3

1. प्रत्यक्ष-2	निर्विकल्प व सविकल्प
2. अनुमान-2	वीत व अवीत
3. शब्द	

4. योग दर्शन

- **प्रणेता** - आचार्य पतंजलि
  - इस दर्शन को 'सेश्वर सांख्य' भी कहते है।
  - 26 तत्व मानते है (सांख्य + 26वाँ तत्व ईश्वर)
- **भाष्य कर्ता** - व्यास
  - "योगश्चित्तवृत्तनिरोध" - पतंजलियोगसूत्र
- **योग दर्शन के 4 पाद** - समाधि, साधन, विभूति व कैवल्य
  - **वहिरंग योग** - यम, नियम, आसन, प्राणायाम व प्रत्याहार
  - **अंतरंग योग** - धारणा, ध्यान व समाधि
- **योग कर्मसु कौशलम्** - गीता
- **समत्वं योग उच्यते** - गीता

5. मीमांसा दर्शन

- **पर्याय** - पूर्वमीमांसा, कर्म मीमांसा
- **प्रणेता** - जैमिनी ऋषि
- **सूत्र** - "अथातो कर्म जिज्ञासा"

मनुष्य के कर्मो की व्यवहारिक दृष्टि से व्याख्या किया तथा कर्म द्वारा फल की प्राप्ति यही इनका मुख्य विषय है।

Shakti's Classes for Ayurveda

- मीमांसा के भाष्यकर्ता - सरभ स्वामी

  श्लोकवार्तिक - कुमारिल भट्ट

त्रिविध कर्म	1. नित्यकर्म	त्रिविध बंधन हेतु	1. भोगायतन-शरीर
	2. निमित्तकर्म		2. भोगसाधन-इन्द्रिय
	3. काम्यकर्म		3. भोग्य-विषय

पञ्चज्ञान - ब्रह्मज्ञान, पितृज्ञान, देवज्ञान, भूतज्ञान व मनुष्य ज्ञान।

6. वेदान्त दर्शन

पर्याय	उत्तर मीमांसा, ज्ञान मीमांसा, ब्रह्मसूत्र, शारीरिकसूत्र, ब्रह्म मीमांसा व भिक्षुसूत्र
प्रणेता	वेदव्यास ऋषि

- **सूत्र -** ''अथातो ज्ञान जिज्ञासा''
- **सिद्धांत -** सर्परज्जु न्याय
- **ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या -** वेदान्तदर्शन
- **पञ्चीकरण सिद्धांत -** द्रव्य में प्रधान महाभूत – 1/2 भाग, शेष 4 महाभूत – (1/8+1/8+1/8+1/8)

अद्वैत सम्प्रदाय	श्री शंकराचार्य (विवर्तवाद)
द्वैत सम्प्रदाय	श्री माधवाचार्य
विशिष्ट द्वैत सम्प्रदाय	श्री रामानुजाचार्य

B. नास्तिक दर्शन - वेद, ईश्वर व परलोक/पुनर्जन्म में आस्था न रखता हो।

1. चार्वाक दर्शन 2. जैन दर्शन 3. बौद्ध दर्शन

1. चार्वाक दर्शन

पर्याय	लोकायतन, वार्हस्पत्य, जड़वाद, देहात्मवाद, प्रत्यक्षवाद
प्रणेता	महर्षि चार्वाक या बृहस्पति देव

सूत्र – 'चैतन्य विशिष्ट काय पुरुषः'।

'सुखमेव स्वर्गः दुखमेव नरकः' तथा 'मरणमेव अपवर्ग'